आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : सातवां | नवम्बर-2014

संपादक प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99 (दिल्ली)	4	परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले **अमृतवेला**
उप संपादक नन्दनी	7	परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से **बीबी जगीर कौर**
विशेष सलाहकार गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04 096 67 23 33 04	11	सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज **मिट्टी का पुतला** गुरु नानकदेव जी की बानी 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान
सहयोगी परमजीत सिंह	29	परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से **परमात्मा का भाणां**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 सितम्बर 2014 -152- मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

अमृतवेला

सतगुरु सच्चे मेरे दाता दर तेरे ते आ गए।

सभी सन्तों ने अपनी लेखनियों में इकबाल किया है कि बाहर के किसी भी लफ्ज़ से गुरु की महिमा और गुरु की दया को बयान नहीं किया जा सकता। गुरु की महिमा को समझने के लिए हमें अंदर जाने की जरूरत है कि वह जिस मुल्क का रहने वाला है हम वहाँ पहुँचें, उसकी महिमा को देखें तो ही हमें समझ आती है कि यह किस तरह हम गंदे जीवों के बीच रहा।

सन्त हमें प्यार से समझाते हैं कि दुनिया में इकट्ठी करने वाली चीज़ भक्ति का धन है। यह धन हमारे साथ जाएगा। भक्ति अमोलक धन है यह खरीदने से नहीं मिलती। भक्ति और गुरु का

प्यार हमारे अंदर से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को निकाल देता है। शान्ति नाम में है लेकिन हम भक्ति के धन को, नाम को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते; हम अपने आप अंदर नहीं जा सकते।

काल ने अंदर बड़े ही भ्रम रचे हुए हैं। हमें पता नहीं कि अंदर किस आवाज को पकड़ना है और किस आवाज को छोड़ना है? किस ज्योत को पकड़ना है और किसे छोड़ना है क्योंकि काल ने निचले चक्रों में अपनी ज्योत पैदा की हुई है। काल ने भी असल की नकल बनाई हुई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अंदर सुरत शब्द धुन जागे, सतगुरु झगड़ निबेड़े।

जब आपके अंदर शब्द प्रकट होता है तो गुरु बताता है बेटा! किस तरफ जाना है और किस आवाज को पकड़ना है? सोचकर देखें! इसमें किसी का कोई विरोध नहीं, किसी की निन्दा नहीं। क्या हम कमाई करके अंदर जाते हैं? नहीं तो ऐसा होगाः

अवरे को उपदेश दे मुख में पड़हे रेत।
रास बिरानी राख ते खाया घर का खेत।।

जो लोगों को उपदेश करते हैं कि कमाई करें लेकिन खुद कमाई नहीं करते वह इस तरह है कि अपने खेत में आग लगी है और दूसरे के खेतों की रखवाली करते हैं।

हमें चाहिए कि हम खुद कमाई करें तभी हम दूसरे की आग बुझा सकते हैं। मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। बाहर की किसी आवाज की तरफ ध्यान न दें। मन को बाहर भटकने न दें, तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

***

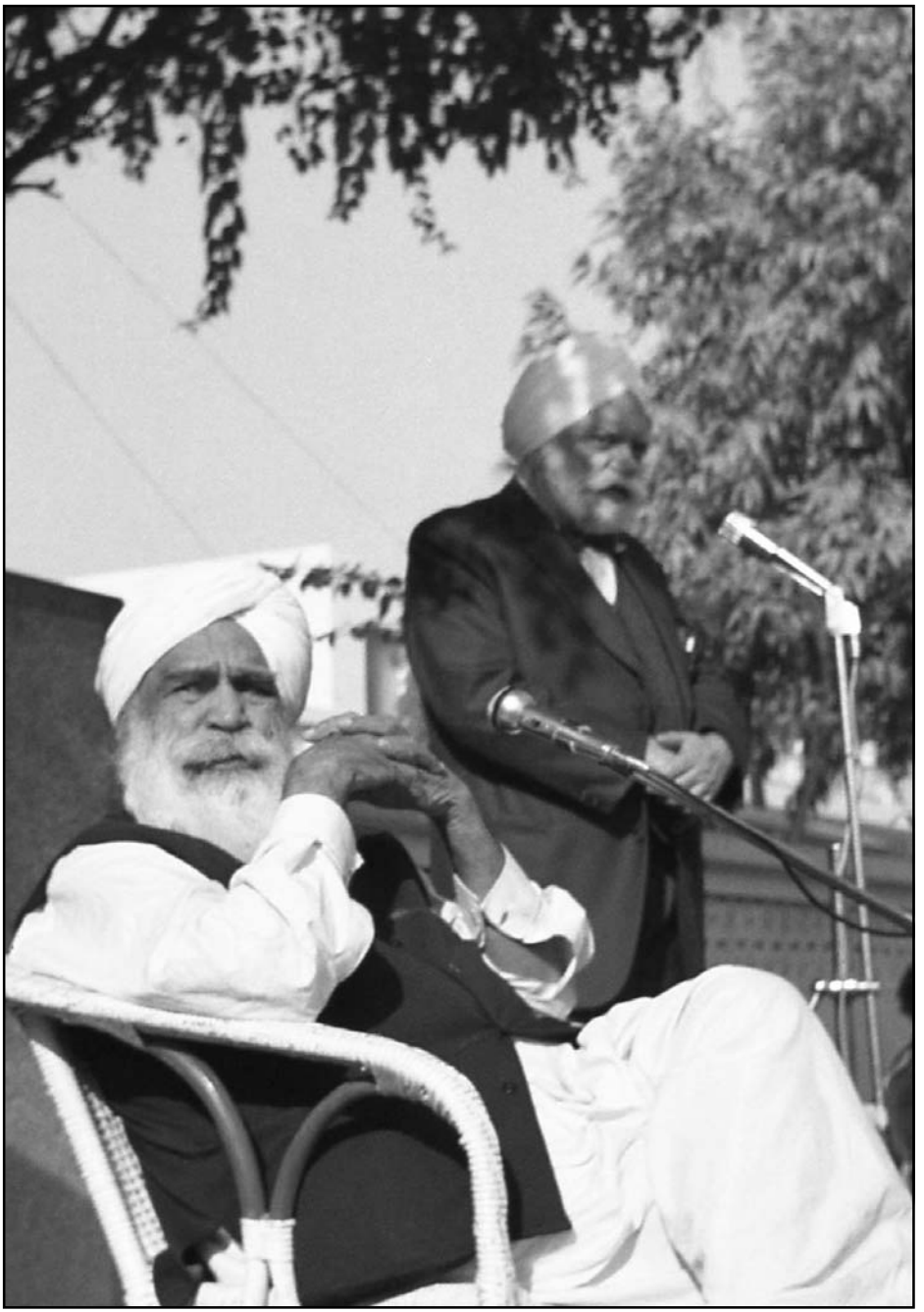

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

बीबी जगीर कौर

बीबी जगीर कौर मेरा खाना तैयार करती थी। बड़ी अच्छी लड़की थी। उसे परमपिता कृपाल का खाना तैयार करने का भी मौका मिला। परमपिता कृपाल बहुत दयालु थे। एक दिन की बात है जब परमपिता कृपाल मेरे घर में आए, दया की लहर दौड़ गई बीबी जगीरो प्यार में फूली न समाई, उसने खाना तैयार किया। हुजूर ने आँवले का अचार खाया। बीबी जगीरो की आँखे हुजूर की तरफ लगी ही रही। वह उस समय को याद कर रही थी जब परमपिता कृपाल के साथ मिलाप हुआ।

जब हुजूर कृपाल पाँच-छह घंटे वक्त बिताकर चले गए, बाद में बीबी जगीरो को इतना रोना आया कि वह किसी के चुप कराने से चुप न हुई, आखिर वह रोते-रोते ही सो गई। परमपिता कृपाल को गए हुए कोई बारह-तेरह घंटे हो गए थे। बीबी बहुत उदास थी आखिर हुजूर महाराज जी दिल्ली से 'शब्द-रूप' में उड़ारी मारकर बीबी जगीर कौर के पास आए और कहने लगे, ''बेटी! तू क्यों रोती है तूने मुझे याद किया मैं आ गया हूँ, अब रोने का क्या काम?'' बीबी जगीरो ने हुजूर को माथा टेका और चुप हो गई।

हुजूर महाराज ने कहा, ''बेटी! अगर बागों की सैर करनी है तो मेरे साथ चल।'' हुजूर महाराज जी उड़ने लगे पीछे-पीछे बीबी जगीरो भी उड़ने लगी। हुजूर बहुत ऊँचे आसमान से ऊपर चले गए वहाँ बहुत सुंदर हरे-हरे बाग लगे हुए थे, उन पेड़ो की टहनियां चांदी की थी और सिरे सोने के थे। उन पेड़ो पर अजीब ही रंग के फल लगे हुए थे; फलों का रंग भी सुनहरी था। वे सोने और चांदी के फल अजीब ही किस्म के थे।

इस देश में उस तरह का सोना चांदी नहीं मिल सकता और न ही उस किस्म के फल मिल सकते हैं। उस बाग में अनेकों ही साधु बैठे बंदगी कर रहे थे। जब उन साधुओं की खुराक का समय होता है तो बाग में लगे फलों में अमृत की धारा बहती हैं जो उन साधुओं के मुँह में पड़ती हैं।

बीबी जगीरो ने पूछा हे सतगुरु! इन फलों में अमृत कहाँ से आता है जो खत्म ही नहीं होता? हुजूर महाराज जी ने कहा , ''पुत्री! यह अमृत उस मालिक की तरफ से आता है। चाहे कोई जितना भी पिए यह खत्म नहीं होता।'' जो साधु संसार मंडल में पूरे सन्तों के हुक्म के अनुसार अभ्यास करके यहाँ आते हैं यहाँ सैर करते हैं उन्हें यहाँ अमृत की खुराक मिलती है। अमृत पीकर उन शिष्यों को संतोष आ जाता है।

यह अमृत सबके लिए है। यहां कोई कमी नहीं लेकिन जो गुरु ज्ञान के बिना मृत्युलोक को ही अपना देश समझ बैठे हैं, मालिक का ध्यान ही नहीं करते और दिन-रात विषय-विकारों में लगे हुए हैं उन्होंने संसार मंडल में भी दुख ही भोगना है। वे मरकर भूत-प्रेत बनते हैं, चौरासी में ख्वार होते हैं। उनका यह अमृत ऐसे ही बेकार चला जाता है। जिन्होंने सन्तों की संगत की है उन्होंने ही यह अमृत पिया है; वे ही यहाँ आकर सुख पा रहे हैं।

परमात्मा जब गुरु के जरिए जीवों पर दया करता है और अपना भरोसा बख्शता है तभी जीव सन्त-सतगुरु की दया से यहाँ आ सकता है वरना किसी की ताकत नहीं कि इस देश में आकर इस अमृत का पान कर सके क्योंकि दुनिया ने काल की नगरी को ही दीन-ईमान, सुखों की नगरी समझ रखा है। दुनिया बहुत दुखी है चीखती चिल्लाती है।

बीबी जगीर कौर ने परमपिता कृपाल से पूछा हे सतगुरु! सच्चे पातशाह क्या मैं सचमुच संसार में मर जाऊंगी मरना किसे कहते हैं? हुजूर ने हँसकर कहा अगर कोई और जीव यह बात करता तो मुझे हैरानी होती। आप समझदार हैं आपको सन्तों का खाना बनाने का मौका मिला है। यह ठीक है कि आपका वक्त नजदीक आ गया है तुम्हें थोड़ा बहुत बता देते हैं। मैं तुझे बताऊंगा तो तुझे ऐतबार नहीं आएगा; तू आँखें बंद कर।

जब बीबी जगीर कौर ने आँखे बंद की तो आपने कहा, ''पुत्री आओ! मेरे साथ चलो और सुंदर-सुंदर देशों की सैर करो।'' आगे -आगे हुजूर उड़ते जा रहे हैं पीछे-पीछे बीबी जगीरो उड़ती जा रही है। आसमान के ऊपर जाकर हुजूर आलोप हो गए; बीबी जगीरो अकेली ही उड़ती जा रही है। रास्ते में एक बड़ा समुद्र आया तो बीबी ने सोचा अगर में इस समुद्र में गिर गई तो कैसे बचूंगी! बीबी यह सोच ही रही थी कि काल का यमदूत छतरी लेकर आ गया और कहने लगा, ''मेरे साथ चल मैं तुम्हें लेने के लिए आया हूँ।''

बीबी ने कहा, ''मैंने तेरे साथ नहीं जाना तू तो यमदूत है, मैंने अपने सतगुरु कृपाल के साथ जाना है। मेरा सतगुरु बहुत सुंदर है उसकी आँखे बब्बर शेर जैसी हैं उसका रोम-रोम चमकता है।'' जब बीबी जगीरो ने सतगुरु की शोभा की तो यमदूत भाग गया।

उड़ते-उड़ते बीबी जगीरो ने देखा कि एक तरफ जंगल और उजाड़ है दूसरी तरफ बाग-बगीचे और रौनक है। बीबी ने सोचा कि मैं यहाँ से किस तरफ जाऊं कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। उसने सतगुरु के आगे विनती की सच्चे पातशाह! दर्शन दें। हुजूर बहुत ऊँची जगह से उड़ते-उड़ते आ रहे हैं आगे-आगे रोशनी होती जा रही है। जब हुजूर पास आ गए तो बीबी जगीरो ने बहुत प्यार से

आपके चरणों में सिर रखकर माथा टेका। सतगुरु ने प्यार देकर कहा, ''पुत्री! आओ चलें।'' आगे-आगे हुजूर जा रहे हैं पीछे-पीछे बीबी जगीरो है। बहुत ऊँचे जाकर सतगुरु ने कहा, ''पुत्री! यह हमारा देश है, यहाँ सन्त रहते हैं।'' बीबी जगीरो ने कहा, ''हुजूर! मुझे यहीं रहने दें इस तरह का अजीब देश फिर कहाँ मिलेगा?'' सतगुरु ने कहा, ''पुत्री! अभी यहाँ नहीं रहना यहाँ तो आपको सैर करने के लिए लाए हैं, अभी तेरा कुछ समय बाकी है।''

जब सैर करते हुए आगे गए तो वहाँ एक बहुत सुंदर महल था। पता नहीं लग रहा था कि वह महल किस चीज का बना हुआ है और यह रोशनी कहाँ से आ रही है? जब उस महल में गए तो वहाँ बहुत ऊंचा और सुंदर तख्त सजा हुआ था। उस तख्त के ऊपर बाबा सावन सिंह जी बैठे थे, उनके बराबर ही महाराज कृपाल बैठे थे। वहाँ और भी सन्त समाधियां लगाकर बैठे थे।

वहाँ से हुजूर और बीबी आ गए। रास्ते में एक जगह हाय! हाय! की आवाज आई, एक तरफ आग बरस रही थी जो लोगों को जला रही थी। बीबी ने पूछा, ''हुजूर! यह क्या कौतुक है?'' सतगुरु ने कहा कि पुत्री! यह नर्क है। जिन्होंने लोगों से धोखा किया, लूटमार और बेइंसाफी की; गरीबों को तड़फाया यह आग उन लोगों के ऊपर बरस रही है। जिन्होंने कोई इंसाफ नहीं किया। जो सन्तों के साथ दुश्मनी करते रहे और कोई नेक काम नहीं किया वे आज तक नर्कों में सड़ रहे हैं। आज कोई भी इनकी पुकार नहीं सुनता, ये सदा के लिए दुखी हैं।

तुम भजन करना, भजन के प्रताप से यमदूत नजदीक नहीं आता। तुम जब भी मुझे याद करोगी मैं तुम्हारी सहायता के लिए जरूर आऊंगा। गुरु हर तरह से अपने शिष्य की संभाल करता है।

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मिट्टी का पुतला

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने दया करके अपना यश करने का मौका दिया है। सब लोग परमात्मा से माँगते हैं ऐसा कौन सा जीव है जो यह कहता हो कि मुझे 'नाम' नहीं चाहिए। हर समाज में मंदिर, मस्जिद कहीं भी जाएं वहाँ प्रभु के नाम की चर्चा है। सभी परमात्मा को लोचते हैं लेकिन परमात्मा ने यह अपने हाथ में रखा हुआ है कि मैंने किसे 'नाम' की वस्तु देनी है? परमात्मा जिसे 'नाम' देना चाहता है उसे पूरे गुरु के चरणों में भेजता है फिर उसकी आत्मा की जन्म-जन्मांतरो की प्यास बुझती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

दे दे आखे सबको जे भावे ते दे।
गुरु द्वारे देवसी तिखा न वारे से।।

जो परमात्मा को पंसद आ जाता है कि अब मैंने इसे जन्म-मरण के चक्कर में नहीं फँसाना परमात्मा उस पर दया करता है, उसे पूरे गुरु की जानकारी मिलती है। जब सन्त उसे 'नाम' के साथ जोड़ते हैं तो उस आत्मा की प्यास और तड़प दूर हो जाती है क्योंकि आत्मा जन्म-जन्मांतरो से प्यासी है।

हमारा शरीर **मिट्टी का पुतला** नाम के आसरे दौड़ा फिरता है। जिस तरह मछली के ऊपर-नीचे, दाँये-बाँये सब तरफ पानी है लेकिन वह प्यासी है; जब तक मछली पलटा नहीं खाती पानी नहीं पी सकती। जब हम गुरु के पास जाते हैं गुरु की बताई हुई युक्ति पर अमल करते हैं अपने ख्यालों को संसार की तरफ से पलटकर नाम के साथ जुड़ जाते हैं तभी हम आत्मा की प्यास बुझा सकते हैं।

जब गुरु नानकदेव जी सिद्धों के पास गए, उस समय सिद्धों ने आपसे बहुत सारे सवाल किए? सिद्धों ने पूछा, ''महाराज जी! आप हमें बताएं कि कलयुग के जीवों के क्या लक्ष्ण होंगे, कलयुग में लोग क्या साधन करेंगे?'' गुरु नानकदेव जी ने उन्हें बहुत प्यार से बताया, ''कलयुग में ज्यादातर जीव पाखंडी होंगे। मुक्ति नाम में है और नाम सन्तों से मिलता है। परमात्मा सच्चा है और परमात्मा का नाम भी सच्चा है। हे परमात्मा! तू धन्य है जिसने हमें उस अमोलक नाम के साथ जोड़ा है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का बीज नाश नहीं होता लेकिन सच्चाई को देखने के लिए विवेक-बुद्धि की जरूरत होती है।'' विवेक बुद्धि उसे कहते हैं जो सच और झूठ का निर्णय कर ले। जिस तरह हँस की चोंच में यह गुण होता है कि वह अपनी चोंच से दूध और पानी को अलग-अलग कर देता है; हंस दूध को ग्रहण करता है पानी को ग्रहण नहीं करता।

इसी तरह जब हम अपने ख्यालों को पवित्र करके दुनिया की बुराई से ऊपर उठा लेते हैं। शील, क्षमा, संतोष और वैराग सब कुछ पैदा करके नाम की कमाई करते हैं अपनी आत्मा को अंदर ले जाते हैं और इसे संसार की तरफ से पलट लेते हैं तो हमें भी विवेक-बुद्धि प्राप्त हो जाती है। सच्चाई खुद नहीं बोलती लेकिन जब हम उस सच्चाई के पास जाते हैं फिर वह हमसे कुछ छिपाकर भी नहीं रखती। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, यह शब्द गौर से सुनने वाला हैः

सती पापु करि सतु कमाहि। गुर दीखिआ घरि देवण जाहि।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''कलयुग में जीव अपने आपको गुरु कहलवाएंगे, स्वामी कहलवाएंगे और धर्म के ठेकेदार भी

कहलवाएंगे। धर्म का प्रचार करेंगे लेकिन पाप से मुँह भी नहीं मोड़ेंगे और पाप करते हुए आगे-पीछे भी नहीं देखेंगे।''

सन्त-महात्माओं ने दसों नाखूनों से मेहनत करने पर बहुत जोर दिया है। हम जब तक हक-हलाल की कमाई नहीं खाते अपनी रोजी-रोटी का कोई साधन नहीं बनाते तब तक ख्याल पवित्र होने की बात दिल से ही निकाल दें।

जैसा खाए अन्न वैसा होय मन।

हमारे मन पर अन्न का बहुत असर पड़ता है, हम सेवकों के धन पर पलना शुरू कर देते हैं। आशा के बिना कोई दान नहीं करता। मैंने देखा है कि बहुत सी औरतें बीमार लड़के के सिर के ऊपर से रोटियां फेरकर देती हैं। आप ठंडे दिल से विचार करके देखें! जो उन रोटियों को खाएगा उसके ख्याल किस तरह अच्छे होंगे? हमें महात्मा की बात का गुस्सा नहीं मानना चाहिए बल्कि महात्मा के बताए तरीके को अपनाना चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि कलयुग के जीव इस तरह के पाखंडी होंगे कि वे अपने आपको धर्मात्मा भी कहलवाएंगे और पाप भी करेंगे।

मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। हम जब तक पारब्रह्म में नहीं पहुँचते तब तक कोई यह कहे कि मैं बाहर अच्छा लेक्चरर बनकर इन डाकुओं से बच जाऊंगा तो वह अपने आपको धोखा दे रहा है और दुनिया को भी धोखा दे रहा है। बातों से किला नहीं जीता जा सकता। वह बाहर से जरूर महात्मा बनकर दिखाता है लेकिन परमात्मा अंदर बैठा सब जानता है, परमात्मा को किसी गवाह की जरूरत नहीं।

राम झरोखे बैठके सबका झारा ले, जांकी जैसी चाकरी तांको तैसा दे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''कलयुग में चेले घरों में बैठे होंगे और गुरु चेलों के घर जाकर उनके कान में मंत्र डालेंगे।''

गुरु जिन्हां का अंधला, सिक्ख भी अंधे कर्म करेंण।
ओह भाणे चलण आपणे, नित झूठो-झूठ बुलेण।।

महात्मा चरणदास जी कहते हैं, ''गुरु गलियों में फिरते हैं कि हमारी दीक्षा लें।''

गलियारे गुरु फिरत है कंठी हमरी लो।

उनके मन में जो आता है वे वही करते हैं। माया इकट्ठी करने के लिए, ज्यादा दिखावा करने के लिए उनके दिल के अंदर हमेशा ही तड़प लगी रहती है, माया नचाती है। भाई गुरदास जी कहते हैं:

सिक्ख बैठण घरा अंदर, गुरु चल तनाड़े घर जाई।
चेले साज वजाएंदे, नचण गुरु बहो विध भाई।।

इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ। भावै आवउ भावै जाउ।

आप प्यार से कहते हैं कि कलयुग में मियाँ-बीवी का प्यार भी मुफ्त का नहीं होगा। मियाँ कमाकर लाता है तो औरत उससे प्यार करती है अगर वह बाहर से कुछ कमाकर नहीं लाता तो औरत कहती है, ''मैंने इस निखट्टु से क्या कमाया, चाहे यह परदेस में रहे चाहे घर पर रहे?''

सासतु बेदु न मानै कोइ। आपो आपै पूजा होइ।

धर्मग्रन्थों में शास्त्र की मर्यादा लिखी है कि नाम बिना मुक्ति नहीं, गुरु बिना नाम नहीं मिलता। हमें सतसंग के बिना समझ नहीं आती लेकिन कलयुग में लोग इसे नहीं मानेगें बल्कि अपनी-अपनी पूजा करवाएंगे; कमाई वाले महात्मा का मजाक उड़ाएंगे। हम कलयुगी जीव भी बहुत प्यार से उनकी पूजा करते हैं। वेदों-

शास्त्रों में लिखा है कि संसार में ऐसा कोई ग्रंथ नहीं जिसमें 'नाम' की महिमा, पूर्ण महात्मा की महिमा नहीं गाई गई। 'नाम' के बिना मुक्ति नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

वेद-कतेब कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे ।।

मैं पिछले साल जून के महीने में पेरिस गया। वहाँ के कुछ अधिकारी मुझसे मिलने आए, उन्होंने मुझसे पूछा कि हिन्दुस्तान के बहुत से धर्मगुरु यहाँ आते हैं। वे हिन्दुस्तान के धर्मग्रन्थों का हवाला देकर यहाँ से माया इकट्ठी करके ले जाते हैं। मैं उन अधिकारियों की बात सुनकर हँसा और मैंने उनसे कहा कि हिन्दु, मुसलमान और सिक्खों के किसी भी धर्मग्रन्थ में यह नहीं लिखा कि आप किसी को माया दें अगर कोई यहाँ से माया इकट्ठी करके ले जाता है तो आप उसे पकड़ें। मैंने भी इसी तरह का बीड़ा उठाया हुआ है आप मेरी मदद करें मैं भी आपके साथ हूँ।

यह सोचने वाली बात है कि हम कमाकर नहीं खाते। सन्त कहते हैं कि दान जरूरतमंद के लिए होता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सबसे पहले अपने घर की जरूरतें पूरी करें अगर आपके घर की जरूरत पूरी हो गई है तो आप अपने पड़ोस की तरफ देखें।'' कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है, पूछो वेद पुरान।।

गुरु जानता है कि कौन जरूरतमंद है? हम तो वहाँ दान करते हैं जहाँ पहले ही दान की कोई कमी नहीं। ये लोग आपका धन अपनी-अपनी पूजा में लगवाएंगे लेकिन परमात्मा की पूजा के लिए कोई नहीं कहता कि परमात्मा की पूजा करें।

काजी होइ कै बहै निआइ। फेरे तसबी करे खुदाइ।
वढी लैकै हकु गवाए। जेको पुछै ता पड़ि सुणाए।

कलयुगी अफसरों के बारे में बताया है कि काजी, जज या बड़ा अफसर होकर माला भी फेरता है, न्याय की कुर्सी पर भी बैठा है लेकिन रिश्वत लेने से कोई परहेज नहीं है। यह नहीं देखता कि यह ठीक है या गलत है।

शास्त्रों में कहानी आती है कि एक तेली के बैल ने काजी के बैल को मार दिया। तेली ने काजी के पास जाकर फरियाद की कि महाराज! अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को मार दे तो उस पर क्या जुर्माना लगेगा? काजी ने कहा किसी किताब में तो इसका कोई कानून नहीं लिखा। बैल जानवर है अगर जानवर ने किसी के जानवर को मार दिया तो इसका क्या किया जा सकता है? तेली ने कहा कि मेरे बैल ने आपके बैल को मार दिया। यह सुनकर काजी को बहुत अफसोस हुआ। काजी ने अपने लड़के से कहा कि लाल किताब पकड़ा देखूं उसके अंदर कोई कानून है? बेशक उस किताब में बैल के लिए कोई कानून नहीं था फिर भी काजी ने दो पन्ने इधर-उधर पलटकर कहाः

लाल किताब का है यह फरमान, तेली ने बैल मरवाया ही क्यों।
खल खाए करे मशटण्ड,बैल का बैल ते तीस रुपये दंड।
जे कोई पूछे ते पढ़ सुनाए।।

काजी ने कहा, ''लाल किताब यह कहती है कि तेली ने बैल को ज्यादा खल खिलाई तो बैल ने मशटण्डपना किया, बैल को मार दिया। अब बैल के बदले बैल और तीस रूपये दण्ड दे।''

तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि। लोक मुहावहि चाड़ी खाहि।
चउका दे कै सुचा होइ। ऐसा हिंदू वेखहु कोइ।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''हिन्दु सारी जिंदगी इसी सुच्चम में लगे रहते हैं कि चोंका दे लिया, रोटी पका ली। बस! इसके आगे परमात्मा को याद नहीं करते।'' एक बार गुरु नानकदेव जी जा रहे थे कि गायों के ऊपर मसूल लगा हुआ था। वहाँ पंडित कर्मचारी लगा हुआ था। गरीब आदमी गाय लेकर जा रहा था। पंडित कर्मचारी ने कहा कि तुझे गाय पर मसूल देकर जाना पड़ेगा। उस गरीब आदमी ने बहुत मिन्नत-खुशामद की। इतनी देर में गाय ने वहाँ गोबर कर दिया। उस पंडित ने सबसे पहले गाय का गोबर उठाया कि इससे चोंका देंगे क्योंकि गाय का गोबर सुच्चा माना जाता है। गुरु नानकदेव जी *आसा जी की वार* में कहते हैं:

गऊ ब्राह्मण को कर लावे गोबर तरन न जाई।

उस गरीब आदमी ने कहा कि आप गाय पर मसूल लगाते हैं लेकिन इसके गोबर से आप कैसे तर जाएंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सुच्चम नाम में है। आप नाम को भूल गए हैं सिर्फ बाहर की सुच्चम में ही लगे रहे कि हम हिन्दु हैं। हिन्दु बने नहीं लेकिन हिन्दु होने का अहंकार जरूर हो गया।''

जोगी गिरही जटा बिभूत। आगै पाछै रोवहि पूत।

गुरु नानक साहब और दसों गुरुओं के जमाने में योगियों का बहुत प्रभाव था। योगी बहुत योगाभ्यास करते थे, जो घर छोड़कर योगी हो जाते हैं उन्होंने आमतौर पर कान में मुन्द्रा पहनी होती है और सिर पर जटा रखी होती है। हर आदमी उन्हें दूर से देखकर नमस्कार करता है। आमतौर पर हम लोगों के दिल में यह ख्याल होता है कि जिसने इतनी बड़ी-बड़ी जटाएं बढ़ाई हुई है और कान फाड़कर इतनी तकलीफ सहकर मुन्द्रा पहनी हुई है यह जरूर परमात्मा से मिला होगा।

मैंने अपनी आँखो से ऐसे योगियों को शादी करते हुए भी देखा हैं जिन्होंने कानों में बड़ी-बड़ी मुन्द्रा पहनी होती है और जटा रखी होती है। जब सिद्धों ने गुरु नानकदेव जी से कलयुग के बारे में पूछा तो गुरु नानक साहब हर किसी के बारे में सच बता रहे हैं कि जिस तरह गृहस्थियों के आगे-पीछे बच्चे चीं-चीं करते हैं उसी तरह योगियों के आगे-पीछे भी बच्चे चीं-चीं करते हैं फिर योगी और गृहस्थियों में क्या फर्क हुआ?

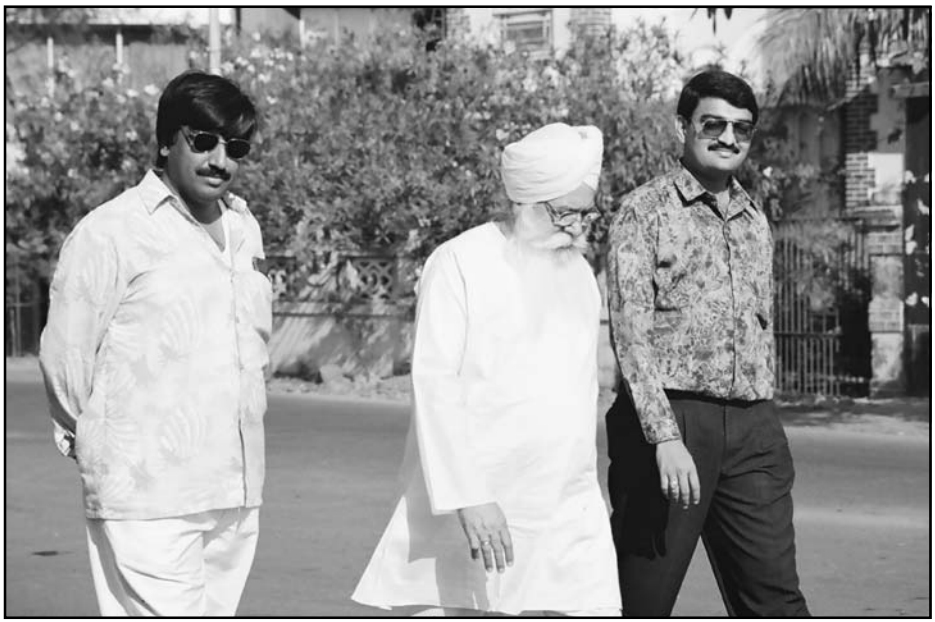

मेरे पिछले गांव का एक आदमी साधु हुआ योगी बना, वह बीस साल नाथ बना रहा। आखिर मन ने उसे बहकाया तो उसे शादी का ख्याल आया। उसने हमारे गांव में आकर सुबह के समय पैरों के नीचे किताब रखकर ऊँची जगह खड़े होकर कहा, ''आज दिन के बारह बजे प्रलय आ जाएगी।'' हम लोग गृहस्थी होते हैं

गांव के सब लोग हाथ जोड़कर उससे कहने लगे, ''बाबा जी! दया-मेहर करें।'' गांव के एक आदमी को उसके बारे में पता था कि यह आज दिन के बारह बजे गृहस्थी बनेगा, आज यह अपना रंगा हुआ चोला उतार देगा। उस आदमी ने लोगों से कहा कि आप लोग अपने-अपने घर जाएं कोई प्रलय नहीं आने वाली इसने आज बारह बजे बैल बनना है। उसने बारह बजे घर आकर कहा कि हमारी जायदाद बाँट दें हमने शादी करवानी है। आप सोचकर देखें! गृहस्थी और उसमें क्या फर्क हुआ? कबीर साहब कहते हैं:

जे गृह करे ते धर्म कर नहीं तो कर वैराग।
वैरागी होय बंधन पड़े तांके बड़ो अभाग।।

आप गृहस्थी है तो अपनी कमाई में से दसवंद निकालते रहें अगर वैराग धारण करके साधु बनकर गृहस्थियों से बुरा बनना है तो यह बहुत बुरा कर्म है।

जोगु न पाइआ जुगति गवाई। कितु कारणि सिरि छाई पाई।

फिर यह न तीतर बना न बटेर बना। गुरुओं ने जो युक्ति बताई थी उसकी साधना नहीं की, सिर में राख डाल ली। इससे तो अच्छा था कि घर में रहकर दस नाखूनों से मेहनत करके खाता।

नानक कलि का एहु परवाणु। आपे आखणु आपे जाणु।।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''कलयुग में ये लक्ष्ण होंगे बेशक ये लोग बात को जानते हैं लेकिन दूसरों को परेशान करने के लिए, नीचा दिखाने के लिए प्रश्न करेंगे लेकिन जब वह उसका जवाब देता है तो कहते हैं कि यह तो मैं जानता हूँ।''

हिन्दू कै घरि हिंदू आवै। सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै।
सूतु पाइ करे बुरिआई। नाता धोता थाइ न पाई।

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हिन्दु हिन्दुओं के पास जाते हैं। वे उनके गले में सूत का जनेऊ पहनाते हैं। जनेऊ की बहुत महानता है। जनेऊ का मतलब जति रहना, पाप की तरफ से हटना है कि अब यह धागे में बंध गया है इस पर धर्म का बंधन पड़ गया है। अगर अब यह किसी की तरफ बुरी नजर से देखता है पाप करता है तो क्या यह पंडित कहलवाने का, हिन्दु होने का हकदार है?'' महात्मा चरनदास जी कहते हैंः

ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पहचाने, बाहर जांदा भीतर आने।
काम, क्रोध, लोभ, मोह न होई चरनदास कहे ब्राह्मण सोई।।

ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म में पहुँच गया है। जिसने मन को बाहर से हटाकर अंदर शब्द के साथ जोड़ लिया है जिसके अंदर कोई कामना नहीं जो बुराई से बचा हुआ है जो रजोगुण, तमोगुण से ऊपर चला गया है वही असली ब्राह्मण है। जब ब्राह्मण गुरु नानकदेव जी को जनेऊ पहनाने के लिए आया तो आपने उससे कहा अगर आप पूर्ण ब्राह्मण हैं और आपके अंदर ये सिफते हैं तो मैं आपके पैरों को हाथ लगाने के लिए तैयार हूँ। गुरु नानक जी कहते हैंः

चौंकड़ मुल्ल अड़ाया बैह चौंके पाया।
सिक्खा कन्न चढ़ाईयां, गुरु ब्राह्मण थीआ।
ओह मुआं ओह छड़ पया, बेतगा गया।।

लड़कियां सूत कातती है ब्राह्मण उस सूत को वट देकर जनेऊ बना देता है अगर जनेऊ पुराना हो जाता है तो उसे उतारकर नया जनेऊ पहन लेते हैं। जब मौत आती है तो जनेऊ सड़ जाता है। जब शरीर ही नहीं रहता तो इसके ऊपर जो चिह्न हैं क्या ये चिह्न हमारे साथ जाएंगे?

दया कपाह संतोख सूत जत गंडी सद वट।
ऐह जनेऊ जीअ का है ही तां पांडे घत।

न ऐह टूटे न मल लगे न ये जले न जाए।
धन सो मानस नानका जो गल चले पाए।।

जब हम नौं द्वारे खाली करके अपनी आत्मा को मन के पंजे से आजाद कर लेते हैं तो हम अपने ऊपर दया करते हैं। कामना निकल गई संतोष आ गया। कल्पना निकल गई, लोभ चला गया। नाम का जनेऊ न टूटता है न मैला होता है। जो नाम का जनेऊ पहनते हैं वे धन्य हैं।

एक बार कबीर साहब गंगा के किनारे चले जा रहे थे। पंडित जी के ऊपर हरिजन का छींटा पड़ गया। पंडित जी उस हरिजन को पीटने लगे कि मेरे पास एक ही धोती है। कबीर साहब ने पंडित से कहा कि यह भी परमात्मा का बंदा है। पंडित जी ने कहा कि यह मलीन जाति से है मेरे ऊपर इसका छींटा पड़ गया है इस समय मेरे पास दूसरी धोती नहीं है। कबीर साहब ने उसे बहुत समझाया कि हम सबके अंदर एक जैसा ही खून पसीना है। हम सब एक ही तरीके से जन्म लेते हैं और सबको एक ही तरीके से मौत आती है लेकिन पंडित जी नहीं माने। कबीर साहब कहते हैं:

जे तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया तो आन वाट काहे नहीं आया।
तुम कत ब्राह्मण हम कत सूत, तुम कत लहू हम कत दूध।।

जिस तरीके से हम माता के पेट से पैदा हुए हैं तुमने पैदा होने का अलग तरीका क्यों नहीं अपनाया। तेरे अंदर भी खून है हमारे अंदर भी खून है, तेरे अंदर तो दूध होना चाहिए था।

सुंदरदास, महाराज सावन सिंह जी का बहुत कमाई वाला नामलेवा था। उसने संसार में बहुत कष्ट देखे लेकिन उसकी साधना भी बहुत थी। वह एक बार फाजिल्का (पंजाब) के नजदीक से निकल

रहा था। सुंदरदास ने नंबरदारी छोड़ी हुई थी। आगे घट्टावाली का कैमा जुलाहा आ रहा था उसने चौंकीदारी छोड़ी हुई थी। दोनों नजदीक से गुजरे। सुंदरदास उम्र में कैमा जुलाहा से बड़ा था।

सुंदरदास ने सोचा कि जुलाहा पहले मुझे बोले, बड़े आदमी के दिल में ऐसा ही ख्याल होता है। सुंदरदास ने जुलाहे को सतश्री अकाल बोला। जब हम पहले बोलेंगे तो अपना ही बोला बोलेंगे। कैमा जुलाहा ने साहब सलाम! बोला। सुंदरदास ने कहा कि मैंने तुझे सतश्री अकाल बोला है। कैमा जुलाहा ने कहा कि सतश्री अकाल तो काफिर बोलते हैं।

सुंदरदास ने जुलाहे से पूछा कि काफिर और मोमिन की क्या पहचान है? कैमा जुलाहा ने कहा कि मोमिन में दूध होता है। सुंदरदास ने कहा अब हम देख लेते हैं कि किसमें से दूध निकलता है? सुंदरदास छह फुट लंबा जवान था। वह गतका भी खेला करता था। सुंदरदास ने जुलाहे से कहा अगर तू भागेगा तो मैं तेरे गिट्टे पर डंडा मारूंगा, मेरे आगे आया तो मैं तेरे सिर में मारूंगा। जुलाहा ऊँट से उतर आया, सुंदरदास ने उसके सिर में डंडा मारा जुलाहा वहीं गिर गया। जुलाहे ने कहा और मत मारना। सुंदरदास ने कहा चल उठ। जब वह अपने आपको संभालकर भागने लगा तो सुंदरदास ने डंडा उसके गिट्टे पर मारकर उसे वहीं गिरा दिया। सुंदरदास उसके सिर को डंडे से पीटने लगा कि जब तक दूध नहीं निकलेगा मैं तुझे नहीं छोडूंगा।

कुछ लोग इकट्ठे हुए और उन्हें पुलिस को पकड़वा दिया। पुलिसवालों ने पूछा कि क्या झगड़ा था? सुंदरदास ने कहा कि साहब सलाम और सतश्री अकाल का ही झगड़ा था। कैमा जुलाहा

कहता था कि मेरे अंदर दूध है। मैंने कहा अगर दूध निकल आया तो मैं तुझे छोड़ दूंगा। आखिर फाजिल्का वाले जज ने सुंदरदास के डंडे पर लिख दिया कि आगे के लिए सुंदरदास को जो भी बोले वह सतश्री अकाल ही बोले।

हम लोग सच्चाई को नहीं जानते कि साहब सलाम भी परमात्मा का नाम है और सतश्री अकाल भी परमात्मा का ही नाम है। सलाम कह लें, राम कह लें चाहे रहीम कह लें। सारे ही नाम परमात्मा के हैं। रहम करने वाले को रहीम कह दिया। गिरे को उठाने वाले को गिरधारी कह दिया। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बलिहार जावां जेते तेरे नाम है।

आप प्यार से कहते हैं कि सन्त-महात्मा ने जो चिह्न बताए हैं उनका बहुत गहरा संबन्ध है। जनेऊ या सिक्खों का कड़ा चेतावनी देता है कि अब तू धर्म के बंधन में बंध गया है।

मुसलमानु करे वडिआई। विणु गुर पीरै को थाइ न पाई।
राहु दसाइ ओथै को जाइ। करणी बाझहु भिसति न पाइ।

उस समय हिन्दु और मुसलमान दो ही समाज थे। मुसलमान अपने दीन की और हिन्दु अपने दीन की बड़ाई करते हैं। प्यारेयो! गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और आप परमात्मा से नहीं मिल सकते। गुरु के बिना अपना घर सचखंड नहीं मिलता। नाम ले लेना ही काफी नहीं कमाई भी करनी पड़ती है। रास्ता तो सभी पूछते हैं लेकिन उस रास्ते पर चलने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

जोगी कै घरि जुगति दसाई। तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई।
मुंद्रा पाइ फिरै संसारि। जिथै किथै सिरजणहारु।

जब हम किसी समाज का अच्छा दबदबा देखते हैं कि इनका आश्रम बहुत बड़ा है, वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होते हैं; इनके पास बहुत माया है। आमतौर पर हम ऐसा प्रताप देखकर ही उनके शिष्य बन जाते हैं। महाराज सावन सिंह जी बहुत प्यार से यह बात बताया करते थे कि एक महात्मा चला जा रहा था, किसी जंमीदार ने कहा, ''देखो महात्मा जी! कितना बड़ा झुंड जा रहा है।'' महात्मा ने पूछा, ''इस झुंड में तेरे कितने पशु है?'' उसने कहा, ''इस झुंड में मेरा अपना तो कोई पशु नहीं लेकिन इसमें मेरे ताये का एक बछड़ा है।'' आप कहा करते थे, ''मिलना तो आपको अपना ही भाग्य है अगर सारी दुनिया हिन्दु या सिक्ख बन जाएगी तो क्या शान्ति आ जाएगी? लेकिन हमारा मन हमें ईर्ष्या में डाल देता है।''

जेते जीअ तेते वाटाऊ। चीरी आई ढिल न काऊ।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''हम जितने भी जीव इस संसार में पैदा होते हैं सब मेहमान की तरह हैं। जब मौत की घंटी बजती है, धर्मराज की चिट्ठी आती है तब यह **मिट्टी का पुतला** किसी के साथ सलाह नहीं कर सकता। किसी को बता नहीं सकता; नीचे का साँस नीचे और ऊपर का साँस ऊपर ही रह जाता है।''

एथै जाणै सु जाइ सिआणै। होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै।

गुरु नानकदेव जी बहुत प्यार से इस शब्द का सारांश बता रहे हैं। आपने पहले सारे समाजों के बारे में समझाया हैं कि हिन्दु अपने समाज की बड़ाई करते हैं और मुसलमान अपने समाज की बड़ाई करते हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि हम जिन लफ्जों के लिए लड़-झगड़ रहे हैं ये सब उस ताकत के नाम हैं। आप उस ताकत को खुदा, परमात्मा, वाहेगुरु या राम रहीम कुछ भी कह लें।

आप मिश्री को किसी भी तरफ से खाएं मुँह मीठा होता है। मिश्री-मिश्री कहने से मुँह मीठा नहीं होता। हमने मिश्री को खाना है। खुदा, परमात्मा, वाहेगुरु या राम रहीम कहने से कुछ नहीं बनेगा। हम जिसका नाम ले रहे हैं हमने उससे जाकर मिलना है।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए उस समय काजी रुकमदीन ने आपसे सवाल किया, ''आप हमें यह बताएं कि रब के घर में हिन्दू बड़े हैं या मुसलमान बड़े हैं?'' आपने कहाः

शुभ अमला बाजो दोनो रोई, जाति पाति मत कोई अहंकार करे।

अच्छे अमलों के बिना दोनों ही रोएंगे। जो यहाँ परमात्मा से मिल लेते हैं परमात्मा को पहचान लेते हैं उन्हें परमात्मा भी पहचान लेता है। जो यहाँ महात्मा हैं वे मरकर भी महात्मा हैं। शायद! दिल में यह ख्याल हो कि जो लोग यहाँ पर चोर, ठग, जनाकार हैं वे मरने के बाद महात्मा बन जाएंगे!

प्यारेयो! मैं मिसाल दिया करता हूँ अगर हम यहाँ से गधो की बिल्टी बनाकर इग्लैड भेज दें कि शायद रास्ते में वे हाथी बन जाएंगे, चाहे बिल्टी पर लिख भी दें लेकिन वे वहाँ गधे ही निकलेंगे। आपका लिखा हुआ कुछ काम नहीं आएगा। महात्मा बनना है तो यहीं बनना है; परमात्मा से मिलना है तो जीते जी मिलना है।

यह तो भूल है कि मरने के बाद किसी ने क्रियाक्रम करवा दिया गंगा में फूल डाल दिए तो हम स्वर्ग में चले जाएंगे; इससे सस्ता सौदा क्या है? सारी जिंदगी पाप-ऐब करते रहे मरने के बाद किसी रिश्तेदार ने यह क्रिया तो कर ही देनी है। महात्मा किसी क्रिया की निन्दा नहीं करते। हम दिल में ख्याल न रखें कि हड्डियों को गंगा में डालने से मुक्ति हो जाएगी। जीव देह छूटते ही अपने कर्मों के मुताबिक हिसाब चुकाता है। आप प्यार से कहते हैंः

जो कुछ करना अभी करना, अग्गे का न भरोसा धरना।

जीते जी नाम जपना है परमात्मा से मिलना है। जीते जी परमात्मा के साथ हमारा मिलाप नहीं हुआ तो मरने के बाद कैसे होगा? नाम ले लिया है फिर दिल में ख्याल आता है! पहले यह कारोबार कर ले फिर गुरु के साथ प्यार करेंगे, गुरु की बताई हुई युक्ति पर चलेंगे। हम नहीं जानते परमात्मा की क्या प्लैनिंग है?

मता करे पश्चिम की ताईं पूरब ही ले जात।

सभना का दरि लेखा होइ। करणी बाझहु तरै न कोइ।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आगे हर एक का साँस-साँस का लेखा होना है, बिना करनी कोई परमात्मा से नहीं मिल सकता।''

सचो सचु वखाणै कोइ। नानक अगै पुछ न होइ।

जो उस सच्चे परमात्मा को पा लेता है वह सच्चे परमात्मा शब्द-रूप गुरु की महिमा करता है कोई उससे पूछेगा नहीं।

गुरुमुख आए जाए निसंग।

गुरुमुख का रास्ता खुला होता है। गुरुमुख जीते जी रोज उस रास्ते से जाते हैं ऐसा नहीं कि वे मरकर ही वहाँ जाते हैं। अगर हम नित-नित किसी चीज का अभ्यास करें तो हमें उसमें महारत पैदा हो जाती है। भाई गुरुदास जी कहते हैं:

गुरुमुख गाडी राह चलांदा।

हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़।

अब गुरु नानकदेव जी सारे शब्द का सारांश बताते हैं कि ऐसे ही हम हिन्दु-मुसमलमान, मंदिर-मस्जिदों के झगड़े खड़े कर लेते हैं। प्यारेयो! जब हर जगह उस परमात्मा की चर्चा है तो हम किस

मंदिर को बुरा कहें किस मस्जिद को अच्छा कहें। हमारा फर्ज बनता है कि हम सबका सत्कार करें।

नौं दरवाजे काया कोट गढ़, दसवां गुप्त रखीजे।
वज्र किवाड़ न खुल्ली, गुरु शब्द खुलीजे।।

आप कहते हैं असली मंदिर आपका शरीर है। हमारा शरीर एक किला है जिसके नौं दरवाजे बाहर संसार की तरफ खुलते हैं और परमात्मा ने दसवां दरवाजा गुप्त रखा हुआ है। यह दसवां दरवाजा अंदर परमात्मा की तरफ खुलता है, परमात्मा दसवें दरवाजे पर वज्र का किवाड़ लगाकर अंदर बैठा हुआ है।

आप किसी महात्मा के पास जाएं और महात्मा के कहे मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करके तो देखें! जो कमाई करते हैं उन्हें पता है कि गुरु क्या करता है? परमात्मा ने आपको मुफ्त का मंदिर मस्जिद दिया हुआ है। आप इसके अंदर दाखिल होकर सच्चे ठाकुर की पूजा करें। गुरु साहब कहते हैः

ठाकुर हमरा सदबोलंता सर्व जीआं को प्रभ दान देता।

अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पदु।
हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिदु।

गुरु नानकदेव जी कहते है, ''आप अंदर जाकर देखें! जिन्होंने इन पाँच डाकुओं-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को बाहर निकाल दिया है उनका शरीर कितना सुंदर है। वहाँ क्षमा, धीरज, संतोष, शील, विवेक पैदा हो जाता है। अभी इन पांच डाकुओं ने हमारे शरीर को खराब किया हुआ है, लूटा हुआ है। मैं आपको बाहर के किसी ईंट-पत्थरों के मंदिर के बारे में नहीं कहता। आपका यह शरीर ही हरि मंदिर है।''

मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कडु ।
सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हम मन के पीछे लगकर इस मंदिर के अंदर नहीं जाते। हमने बाहर जो अपने हाथों पैरों से मंदिर बनाए हैं उनके अंदर दिन-रात खोज कर रहे हैं। जंगलों में छिप जाते हैं पहाड़ों में चले जाते हैं; घर की जिम्मेवारियां छोड़ देते हैं लेकिन वह परमात्मा हमारे अंदर बैठा है।''

प्रभु सबका दाता है, बादशाह है। जब सबके अंदर वही परमात्मा है तो हम किसी से नफरत क्यों करें? मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे सब परमात्मा की जगह हैं हमें सबका सत्कार करना चाहिए क्योंकि परमात्मा तो हमारे शरीर के अंदर है। हमें चाहिए कि हम 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने जीवन को पवित्र बनाएं।

इस शब्द में गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सारा संसार एक मेहमान की तरह है। वही मेहमान समझदार है जो घर में बैठकर अच्छी बात करे। वह खुद परमात्मा की भक्ति करे और घर के लोगों को भी परमात्मा की भक्ति में लगाए।

हम इस संसार में मेहमान आए हुए हैं, हमें इसमें बैठकर 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए और हमारे पास जो लोग रहते हैं उन्हें भी बताएं कि हमारा इस तरह फायदा हुआ है अगर आपकी समझ में आता है तो आप भी कर लें। हमें किसी के साथ लड़ना-झगड़ना या बहस नहीं करनी चाहिए। हमें गुरु साहब ने जो कुछ इस शब्द में बताया है उसे अपने जीवन में ढ़ालना है।

सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ।।

***

DVD - 313

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

परमात्मा का भाणां

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। मुझे यहाँ एक्टन में आकर काफी खुशी होती है। आप सबको पता है कि माता मिली परमात्मा कृपाल की बहुत प्यारी थी। माता मिली ने परमात्मा कृपाल की शिक्षा पर काफी अमल किया था। यहाँ प्रेमी उसे याद करते हैं, मुझे उन प्रेमियों से मिलकर खुशी होती है जिन्होंने माता मिली की बहुत सेवा की।

हमने गुरु शिष्य के आपसी प्यार से प्रेरणा लेनी है, शिष्य के अंदर भी गुरु होता है; गुरु ने ही शिष्य के अंदर प्यार का पौधा लगाया होता है। मेरे दिल में उन प्रेमियों के लिए बहुत कद्र है जिन्होंने माता मिली की सेवा की है। मैं जब भी सन्तबानी आश्रम अमेरिका आता हूँ तो ऐक्टन आने की मेरी कोशिश होती है।

मैं जीन का भी धन्यवादी हूँ जो पहले से ही मेरा कार्यक्रम तैयार करता है। यह जब भी मिलता है तो कहता है कि जब भी सन्तबानी आश्रम अमेरिका का प्रोग्राम हो तो एक्टन में प्रोग्राम जरूर रखना। आप सब जानते हैं कि माता मिली ने एक माता की तरह ही मेरी देखभाल की।

माता मिली ने बताया कि एक दिन ऐसा भी था कि महाराज कृपाल ने मेरी झूठी प्याली में चाय डालकर पी और कहा, ''जिसने मेरे बाद काम करना है उसे माता की बहुत जरूरत है।'' वह जब राजस्थान आई तो उसने मुझे यह सब बताया।

जो परमात्मा कृपाल के नजदीक रहे हैं या जिन्होंने परमात्मा कृपाल के दर्शन किए हैं मेरे दिल में उनकी बहुत इज्जत है, मैं उन सबका सत्कार करता हूँ। मेरे गुरु को मेरा जितना फिक्र था मैं उसे बयान नहीं कर सकता। उस समय राजस्थान में जो लोग राजनीति में मजबूत थे जिनका उस इलाके में जोर था महाराज कृपाल उनके घर गए। आपने उन लोगों को बहुत प्यार से कहा, ''आप लोगों ने मेरे साहब की देखभाल करनी है।'' अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि गुरु को अपने शिष्य का कितना फिक्र होता है? वही शिष्य की कद्र करता है जो गुरु की कद्र करता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जो दीसे गुरु सिखणा तिस निव निव लग्गां पाये जिओ।
आखा बिरथा जीअ की मेरा सभे दुख गँवाए जिओ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं:

तू आपे गुरु चेला गुरु विच दे तुझो ध्याई।

वह आप ही गुरु है आप ही चेला है। गुरु द्वारा ही परमात्मा को ध्याया जाता है। अध्यापक के अंदर भी वही विद्या है और स्टूडेंट के अंदर भी वही विद्या होती है फर्क इतना ही है कि स्टूडेंट के अंदर विद्या सोई होती है और अध्यापक के अंदर विद्या जागी होती है। जैसे-जैसे स्टूडेंट अध्यापक की सोहबत करता है उसका कहना मानता है अध्यापक के कहे मुताबिक मेहनत करता है उसके अंदर सोई हुई विद्या जाग जाती है। जब स्टूडेंट के अंदर विद्या जाग जाती है तो वह डिग्री प्राप्त कर लेता है फिर टीचर और स्टूडेंट में कोई फर्क नहीं रहता।

बच्चों की किताब में यह कहानी आती है जिसे महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी भी अपने सतसंगों में सुनाते रहे हैं। किसी गांव में एक बूढ़ा फकीर रहता था, उस गांव में अकाल पड़ गया। गांव वाले इकट्ठे होकर बूढ़े फकीर के पास गए और फकीर से कहा कि आप हमारे लिए दुआ करें कि बारिश हो जाए ताकि अच्छी फसल हो। बूढ़े फकीर ने कहा, ''आप कुछ समय रुक जाएं **परमात्मा का भाणां** मानें।''

एक दिन उस गांव के सारे कुत्ते मर गए फिर सब लोगों ने इकट्ठे होकर बूढ़े फकीर के पास जाकर कहा, महाराज जी! आप हमारे हक में दुआ करें, हमारे सारे कुत्ते मर गए हैं। बूढ़े फकीर ने कहा, ''यह **परमात्मा का भाणां** है आप इस भाणें को मानें।''

फिर उस गांव के सारे मुर्गे मर गए। गांव के लोगों ने बूढ़े फकीर के पास जाकर विनती की लेकिन बूढ़े फकीर ने कहा, ''आप **परमात्मा का भाणां** मानें।''

उस समय वैज्ञानिक युग नहीं था। माचिस का साधन नहीं था। उस समय लोग पत्थर के ऊपर पत्थर रगड़कर आग पैदा किया करते थे। आमतौर पर उस आग को दबाकर रख लेते थे अगर उस समय आग बुझ जाए तो बहुत मुश्किल था। एक दिन सारे गांव की आग बुझ गई। गांव के लोगों ने फकीर के पास जाकर विनती की। फकीर ने फिर कहा, ''आप लोग **परमात्मा का भाणां** मानें परमात्मा जो करता है अच्छा करता है।''

उस गांव के लोग बहुत परेशान हुए कि बारिश नहीं हुई हमारी फसलें तबाह हो गई। हमारे कुत्ते मर गए है। मुर्गे मर गए है। पूरे गांव की आग बुझ गई हैं लेकिन यह फकीर हर बार **परमात्मा का भाणां** मानने पर ही जोर देता है इसके पास जाने का क्या फायदा है?

कुछ दिनों के बाद कोई बादशाह मारो-मार करता हुआ उस गांव की तरफ आया। बादशाह ने अपने लश्कर से कहा कि देखों! यहां कोई आबादी है! कुत्ते भौंकते होंगे? लेकिन कुत्ते तो मर चुके थे फिर पूछा कोई मुर्गा बोलता होगा? कोई मुर्गा भी नहीं बोल रहा था क्योंकि मुर्गे भी मर चुके थे। उसने फिर पूछा अगर यह जगह आबाद है तो चूल्हों में से धुआँ निकल रहा होगा? उन्होंने कहा यहाँ कोई धुआँ भी नहीं निकल रहा। वे उस जगह से दूर चले गए कि यहाँ कोई आबादी नहीं हम क्यों अपना समय बर्बाद करें।

जब उस गांव के लोगों को पता चला कि बादशाह कत्लोगारत करता हुआ इस तरफ आ रहा था लेकिन जब उसे ये निशानियां

नहीं मिली तो वह दूर से ही चला गया। अब गांव के लोगों ने फकीर पर तो ईमान लाना ही था। उन्होंने फकीर का लाख-लाख शुर्काना किया। सन्तों के राज़ का बाद में ही पता लगता है।

इसी तरह परमात्मा कृपाल ने हमें भाणां मानने पर जोर दिया। जब उसका भाणां टलता ही नहीं क्योंकि वह मालिक बेअंत है खुद मुख्तियार है तो हम सब उसका भाणां मानें; इंसानी जामें की कद्र करें। सब गुरु शिष्य आपस में मिलकर बैठें, कोई पराया नहीं सबके अंदर वह परमात्मा है। पशु, पक्षी, इंसान, हैवान हर एक के अंदर परमात्मा है अगर हम किसी के साथ नफरत करते हैं तो परमात्मा के साथ नफरत कर रहे हैं। आप भजन में पढ़ते हैं:

कोने कोने ते मैं फिरया, नूर तेरा हर थां दिसया।
मैंनू तेरे बिना दिसदा ना होर दातेया।।

प्यारेयो! मैं जिस भी मुल्क में गया हूँ मुझे आत्माओं से मिलकर बहुत खुशी होती है। जब मैं अपने गुरु को हर एक के अंदर देखता हूँ तो मेरी आत्मा में सरूर आता है। उसका धन्यवाद करने का मौका मिलता है कि किस तरह उसने समुद्रों-पहाड़ों, दूर-नजदीक, धरती के कोने-कोने पर प्यार के पौधे लगाए हैं।

आप हमेशा कहा करते थे, ''एक बनों नेक बनों।'' जब हम परमात्मा से मिलकर एक हो जाएंगे तब हम नेक बन जाएंगे, अपने जीवन को भी सुधार लेंगे। सन्तों के हर वचन में बहुत गहरा राज़ होता है बहुत गहराई होती है। जिन प्रेमियों ने यहाँ मिलकर प्रबंध किया है मैं अपने गुरु परमात्मा सावन-कृपाल के नाम में उन सबका धन्यवादी हूँ।

***

26.07.96

धन्य अजायब

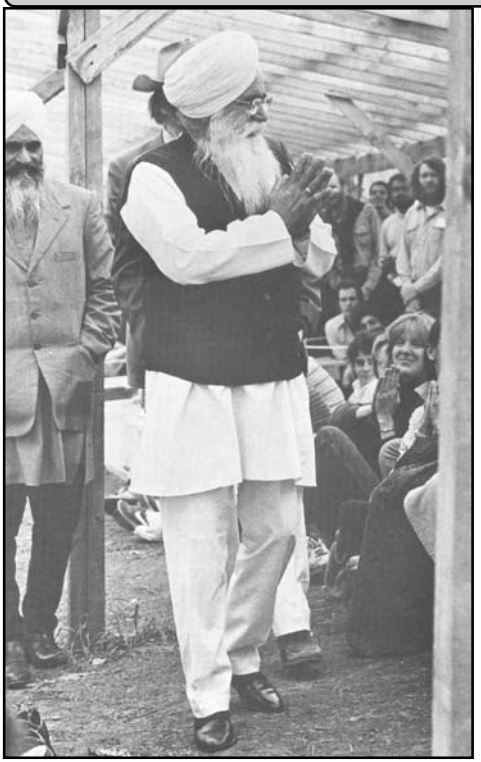

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम:

28, 29 व 30
नवम्बर 2014

26, 27 व 28
दिसम्बर 2014

2, 3, 4,5 व 6
फरवरी 2015

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 7,8,9,10 व 11 जनवरी 2015 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन, शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा) कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067

☎ 098 33 00 4000